संकल्प: - ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु:। ऊँ श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टा विंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे केदारखण्डेऽलकनन्दाया उत्तरस्मिन्तटे धारीदेवीसिद्धक्षेत्रे वर्तमान ....संवत्सरे .... अयने .... महामांगल्यप्रदे मासानामुत्तमे .... मासे .... पक्षे .... तिथौ ....वासरे ..... नक्षत्रे .... राशिस्थिते सूर्ये यथास्थितेषु चन्द्रभैमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभयोगे शुभकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ श्रीनवदुर्गाऽनुग्रहतो ग्रहकृतराजकृतसर्वबाधा निवृत्तिपूर्वकं ग्रहादीनां स्थितिवशादुत्पन्नदोषेण व्यवहारे चोत्पन्नानामुत्पद्यमानानां च विघ्नानां प्रशमनपूर्वकं, भौम्यान्तरिक्षदिव्यमहोत्पातागामी संचितसूचितदुष्टानिष्ट दोषपरिहारपूर्वकं विशेषेण स्वकीयै: परकीयै: स्वग्रामस्थैरन्यैर्वा कृतक्रियमाण कारयिष्यमाणदुष्टयंत्रमंत्रतंत्रविषशल्यौषधप्रतिमास्थापनादिसर्वाभिचारकर्मघातकर्मफणि हवन श्येनयजनदुर्निरीक्षणदुर्दैवतोपासनादिक्षुद्रकर्मजन्यदोषपरिहारपूर्वकं विशेषतो राजादिसर्वकारै: अलकनन्दानद्यां कियमाणकारयिष्यमाणं वा श्रीनगरपरियोजनाया अवरोधनखण्डननिषेधनार्थं न्यायालये राजसभायां तद्द्वारे वा सर्वत्र सर्वजनहिताय प्रकृते:रक्षणाय गंगाऽलक नन्दादिनदीनां आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकस्वरूपरक्षणार्थं भो मात ह्रीं दुं दुर्गे किं स्वपिषी उत्तिष्ठ पुरुषी सर्वत: समुपस्थितानर्थनिवृत्तये स्वयं कृरु वा मां निमित्तीकृत्य वा यत्कर्तव्यं तत्कारय तदर्थं शापोद्धारपुरस्सरं कवचार्गलाकीलकपाठवेदतन्त्रोक्तरात्रिसूक्त पाठदेव्यथर्वशीर्षपाठन्यासविधिसहित - नवार्णजपसप्तशतीन्यासध्यानसहितचरित्रसंबंधीविनियोग यासध्यान पूर्वकं संपुटेन सह दुर्गासप्तशतीपाठं कृत्वा तदन्ते न्यासविधिसहितनवार्णवमन्त्रजपं वेदतन्त्रोक्तदेवीसूक्तपाठं रहस्यत्रयपाठं शापोद्धारादिसहितं सग्रहमखां स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नवग्रहपूजनं नान्दीश्राद्धादिकार्ये आदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयो: पूजनमहं(यजमानस्य गोत्रादिकथनपूर्वकं प्रथमान्तेन नाम उक्त्वा) श्री ......नामकार्चकेन (अर्चकस्य च गोत्रादिकथनपूर्वकं) कारयिष्ये।

संपुटमन्त्र: :- अर्जुन: फाल्गुनो जिष्णुर्किरीटी श्वेतवाहन:।
अनन्तो विजय: कृष्ण: सव्यसाची धनंजय:।।

श्रीनवदुर्गादेवी का अनुग्रह से ग्रह और राजा द्वारा कृत सभी बाधा की निवृत्तिपूर्वक तथा ग्रहों का स्थिति के वजह से उत्पन्न दोष के कारण व्यवहार में उत्पन्न व उत्पन्न होनेवाले विघ्नों का प्रशमनपूर्वक एवं भूमि, अन्तरिक्ष और द्युलोकों में होने वाले महान् उत्पात जो आगामी व संचित द्वारा सूचित समस्त दुष्टानिष्ट व दोष का परिहार केलिये तथा विशेष रूप से अपने ग्राम के अथवा अन्य ग्राम के अपने अथवा पराये लोगों द्वारा किये गये, कराये जारहे व भविष्य में कराये जावे जो दुष्ट यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, विष शल्य, विष औषध, प्रतिमा स्थापनादि सकल अभिचार कर्म सहित घात कर्म, फणिहवन, श्येनयाग, बूरा नजर, दुष्ट व क्षुद्र देवताओं का उपासना आदि क्षुद्र कर्म जन्य दोषों का परिहार के साथ केन्द्रसरकारादि द्वारा गंगा अलकनन्दा आदि नदीयों पर किये जा रहे व कराये जानेवाले समस्त परियोजनाओं का रोकने, तोडने व खारिज करने हेतु न्यायालयों व सरकारी कार्यालयों में सर्वत्र सर्वजनहित केलिये, प्रकृति की रक्षा केलिये, गंगा अलकनन्दा आदि नदीयों के आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकस्वरूप की रक्षा केलिये हे माते आप क्यों सोरही हैं, उठिये और चारों ओर उपस्थित अनर्थ व अन्याय का निवृत्ति केलिये आप स्वये अथवा मुझे निमित्त बनाकर आप जो करना चाहती हैं उसे करावे उस केलिये शापोद्धार पूर्वक कवच .... गणेशाम्बिका का पूजन मैं श्री भरत .... नामक अर्चक के द्वारा कराता हूँ।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM